16. पुरानी इमारतें

लकड़ी से पत्थर तक

शिकारी मानव की तो गुफाएं थीं। पर, खेती की शुरुआत के समय लकड़ी व मिट्टी की झोपड़ियां थीं और सिन्धु घाटी के शहरों में ईंट के मकान थे। मनुष्य की इमारतें बनाने की कोशिश के ये उदाहरण तुमने देख लिए हैं।

सिंधु घाटी के शहरों के नष्ट होने के बाद बहुत लम्बे समय तक ईंट की इमारतें नहीं बनीं। लोग लकड़ी और मिट्टी से ही घर व इमारतें बनाते थे। लकड़ी के होने के कारण ये घर व इमारतें समय के साथ सड़ कर खत्म हो गईं। इनके बहुत कम निशान मिलते हैं। फिर भी जो निशान मिलते हैं उनसे जान पड़ता है कि जनपदों के समय में लकड़ी से बने घर, बागुड़ और तोरण द्वार का दृश्य कुछ ऐसा दिखता था – (चित्र-1)

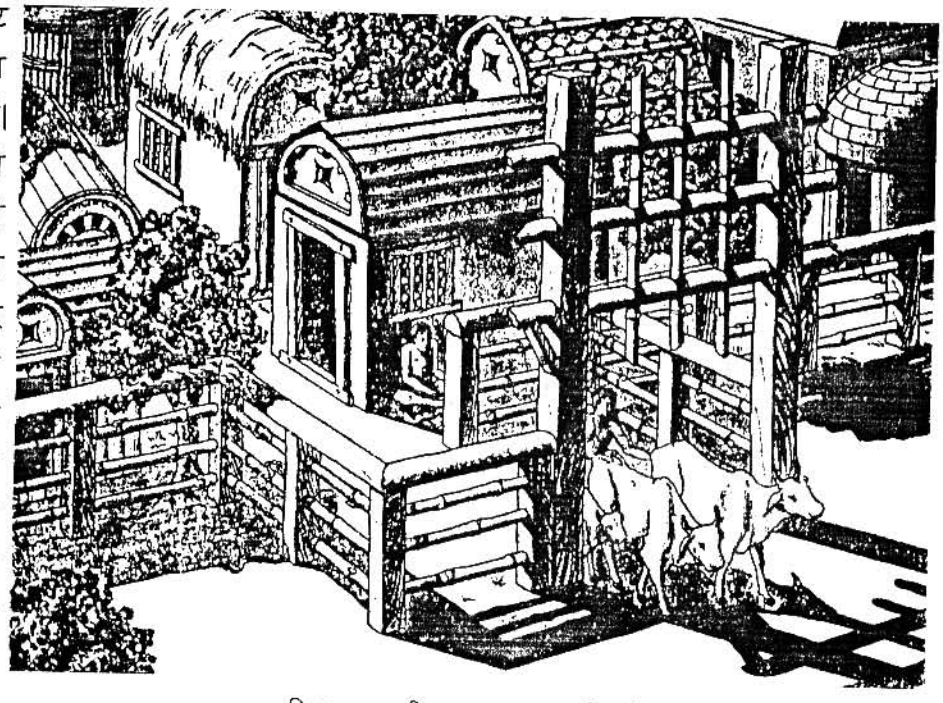

चित्र 1. लकड़ी का घर, बागुड़ और तोरण

तोरण द्वार व बागुड़ बनाने के लिए लकड़ियां कैसी जोड़ी गई हैं– चित्र देखकर समझो। तुम आस-पास के पेड़ की डाली व टहनी जुटा कर ऐसा द्वार व बागुड़ (यानी रेलिंग) बनाओ।

बुद्ध की मृत्यु के बाद जगह-जगह उनकी अस्थियों के ऊपर स्तूप या गुम्बद बनाए गए। स्तूप मिट्टी की कच्ची ईंटों से या पत्थर के टुकड़ों से बने।

सांची का स्तूप: यह भोपाल से विदिशा जाने के रास्ते में पड़ता है। राजा अशोक के समय में यानी आज से 2300 साल पहले यह स्तूप बना था। भारत में जिन सबसे पुरानी इमारतों को हम आज भी देख सकते हैं उनमें से एक है सांची का स्तूप।

स्तूप अन्दर से खोखला नहीं है– ठोस है। उसके चारों तरफ रेलिंग (यानी बागुड़) और तोरण द्वार हैं- पर ये पत्थर के बने हैं। अब इमारत बनाने वाले कारीगर पत्थर से इमारतें बनाने की कोशिश करने लगे थे। पर

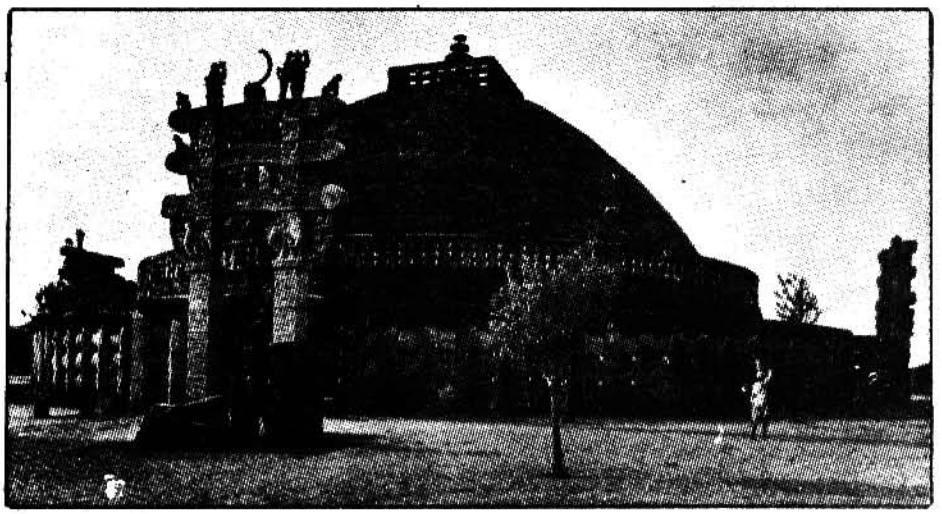

चित्र 2. सांची स्तूप

उन्हें लकड़ी के द्वार, बागुड़ आदि बनाने का ही ज़्यादा अभ्यास था। इसलिये शायद शुरू में उन्होंने लकड़ी के द्वार व बागुड़ की नकल करके ही पत्थर के द्वार व बागुड़ बनाए।

सांची के स्तूप के द्वार व बागुड़ का यह पास का दृश्य देखो। यह पहचानो कि पत्थर के टुकड़ों को उसी तरह जोड़ा है जैसे लकड़ी के द्वार व बागुड़ को जोड़ा गया था। यह क्या तरीका था? क्या जोड़ने के लिए सीमेन्ट चूने आदि का इस्तेमाल हुआ लगता है?

गुफा मंदिर

उन दिनों यद्यपि रहने के लिए तो इमारतें लकड़ी से ही बनती रहीं- ऐसे बड़े-बड़े महल तक लकड़ी से ही बनाए जाते थे– (चित्र-3) पर लकड़ी की बजाए पत्थर से इमारतें बनाने की कोशिश जारी रही। खास कर धार्मिक इमारतों को पत्थर से बनाने की कोशिश रही ताकि वे लंबे समय तक नष्ट न हों।

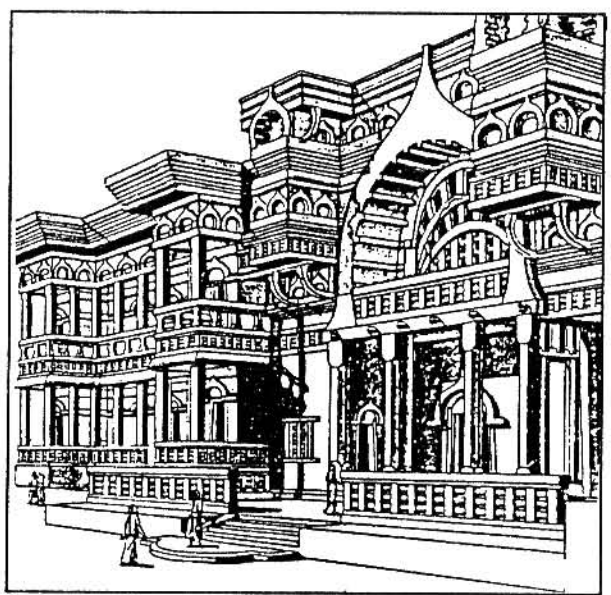

चित्र 3. लकड़ी का महल

चित्र 4. भाज की गुफा

पर कैसे बनाएं पत्थर से इमारतें? कैसे पत्थर को निकाले, फोड़ें, काटें- क्या करें? उन दिनों कारीगर इस तरह अपना दिमाग बहुत लड़ाते होंगे। और देखो उन्होंने पत्थर से इमारतें बनाने की क्या तरकीब निकाली- हां पहाड़ ही खोद डाला। चट्टान खोद कर गुफा बनाई और उसी में अपनी छैनी हथौड़ी से खम्भे, दरवाजे, आले तराश दिए। जैसा घर वे लकड़ी से बनाते थे वैसा घर उन्होंने पहाड़ काट कर बनाने की कोशिश की। (चित्र-4) इस गुफा का चित्र तुम्हें लकड़ी के महल के चित्र जैसा दिख रहा है न?

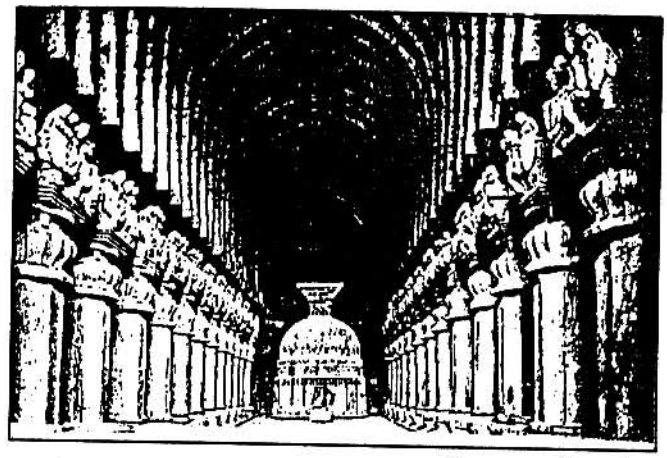

चित्र 5. कार्ले का चैत्य

सैकड़ों ऐसी गुफाएं बनाई गईं। बहुत सुन्दर गुफाएं। किन्हीं में बौद्ध भिक्षु रहते थे, किन्हीं में जैन मुनि रहते थे और किन्हीं में ब्राह्मण। ये गुफाएं विहार कहलाती थीं। फिर जब देवताओं की मूर्तियां बनने लगीं तो इन गुफाओं में मूर्तियां भी बनाई जाने लगीं। बौद्ध भिक्षुओं ने बड़ी गुफाएं कटवा कर उनके अन्दर स्तूप बनवाए। वे गुफा में स्तूप के सामने बैठकर प्रार्थना करते थे। इसे चैत्य कहा जाता था। ऐसे गुफा मंदिर व चैत्य व विहार तुम इन जगहों पर देख सकते हो- विदिशा के पास उदयगिरि, औरंगाबाद के पास अजिंठा, एल्लोरा और पुणें के पास कार्ले। अजिंठा गुफाओं के अन्दर वे रंगीन चित्र भी सुरक्षित हैं जो हज़ारों साल पहले किन्हीं चित्रकारों ने बनाए थे। उनमें अभी भी रंग दिखता है। पर तुम तो 10-20 हज़ार साल पुराने शिकारी मानव के बनाए चित्र भी देख चुके हो। कितनी पुरानी चीज़ें बची रहतीं हैं - हमसे अपने समय की बातें कहती रहती हैं।

पहाड़ काट-काट कर मंदिर और चैत्य बनने लगे थे- पर हर जगह पहाड़ नहीं हैं। क्या वहीं मंदिर आदि बनेंगे जहां पहाड़ हैं? क्या पत्थर से किसी भी जगह पर इमारत खड़ी नहीं की जा सकती?

चित्र 6 अजिंठा की गुफाओं का चित्र

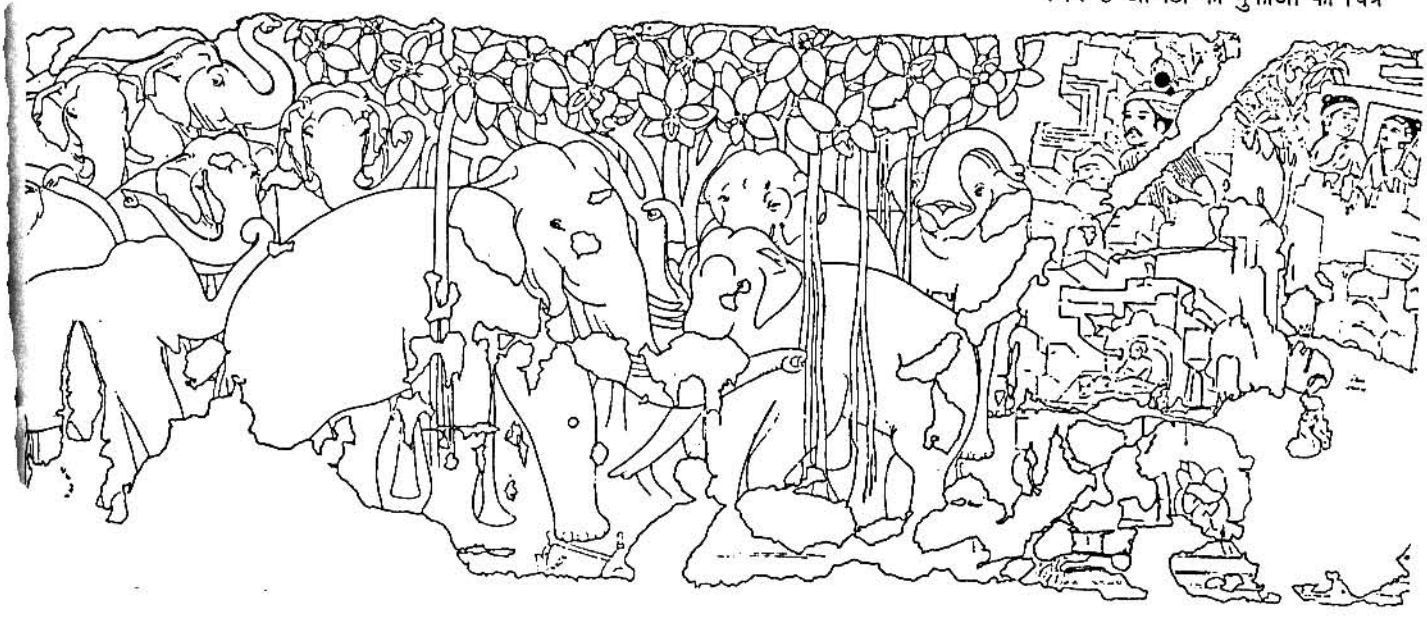

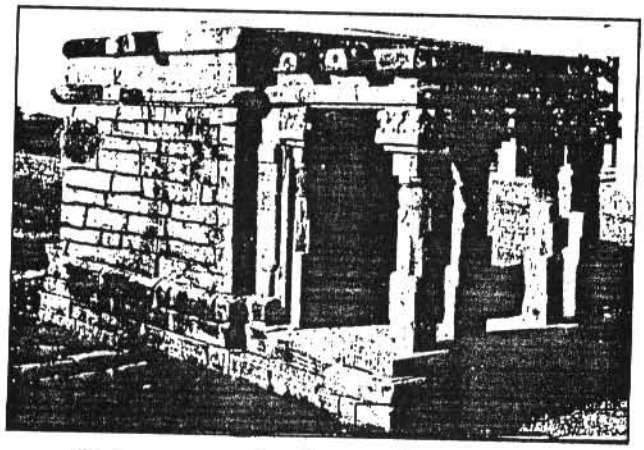

चित्र 7. शुरू-शुरू के मंदिर - सांची स्तूप के पास

तरह-तरह के मंदिर

समय के साथ कारीगरों ने ऐसा सोचा होगा। और यह भी सोचा होगा कि चट्टानों के टुकड़े काट-काट कर उनसे इमारत खड़ी तो की जा सकती है, पर पत्थर एक के ऊपर एक कैसे खड़े रहेंगे? कुछ समय में ही लुढ़क-लुढ़का गए तो? जो भी डर व झिझक उनके मन में रही हो पर उन कारीगरों ने इस दिशा में कोशिश तो की।

पहले छोटी और सरल सी इमारत बनाई। चित्र-7 देखो- यह मंदिर सांची में बुद्ध की मूर्ति रखने के लिए बनाया गया था। सबसे शुरू के मंदिर ऐसे बने थे। पत्थर की शिलाएं काट कर एक के ऊपर एक बड़ी सावधानी से रखी हैं। जिससे उनका संतुलन बना रहे- वे लुढ़क न जाएं, खिसक न जाएं। पत्थर को चूने व गारे के घोल से मज़बूती से जोड़ने की विधि उन दिनों के कारीगर इस्तेमाल नहीं करते थे। इस विधि क बग़ैर ही पत्थर इस तरह एक के ऊपर एक चढ़ाते जाते थे जिससे वे वर्षों तक टिके रहेंगे। एक दूसरे के भार से ही ये पत्थर सैकड़ों सालों तक सधे रहे हैं। आज भी तुम कई ऐसे मंदिर देख सकते हो। कभी देखने का मौका मिले तो ध्यान देना कि कैसे बहुत बड़ी-बड़ी इमारतें भी पत्थर के टुकड़ों को एक के ऊपर एक टिका कर खड़ी की गई हैं।

चित्र 8. उड़ीसा का एक मंदिर

चित्र 9. तमिलनाडु का एक शिव मंदिर

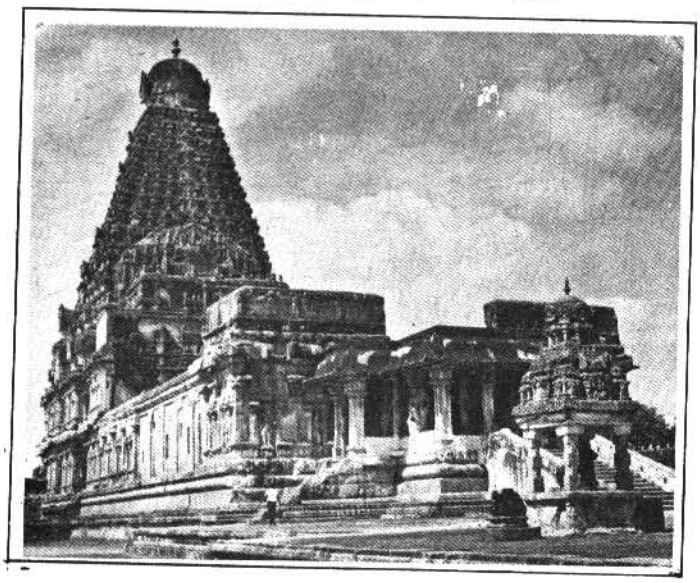

पर इन मंदिरों में अचम्भे और आश्चर्य की सिर्फ यह बात नहीं है। पत्थरों पर तराशी गई मनुष्य और जानवरों की आकृतियां, फल, बेल-बूटे, और तरह-तरह के सुन्दर डिज़ाईन आदि बताते हैं कि उस पुराने समय के कारीगर कितने मंजे हुए कलाकार थे।

अब जब कहीं भी मंदिर आदि बनाए जा सकते थे, तो वाकई भारत के हर क्षेत्र में कई सुन्दर मंदिर बने। हर क्षेत्र के कलाकारों ने और राजाओं व सामन्तों ने अपनी पसन्द की शैली में मंदिर बनवाए।

यहां तुम उड़ीसा, खजुराहो और तमिलनाडु के मंदिरों की अलग-अलग बनावट पर ध्यान दो। यह भी देखो कि समय के साथ कारीगर पहले की तुलना में बहुत सुंदर और मुश्किल इमारतें बनाने लगे थे।

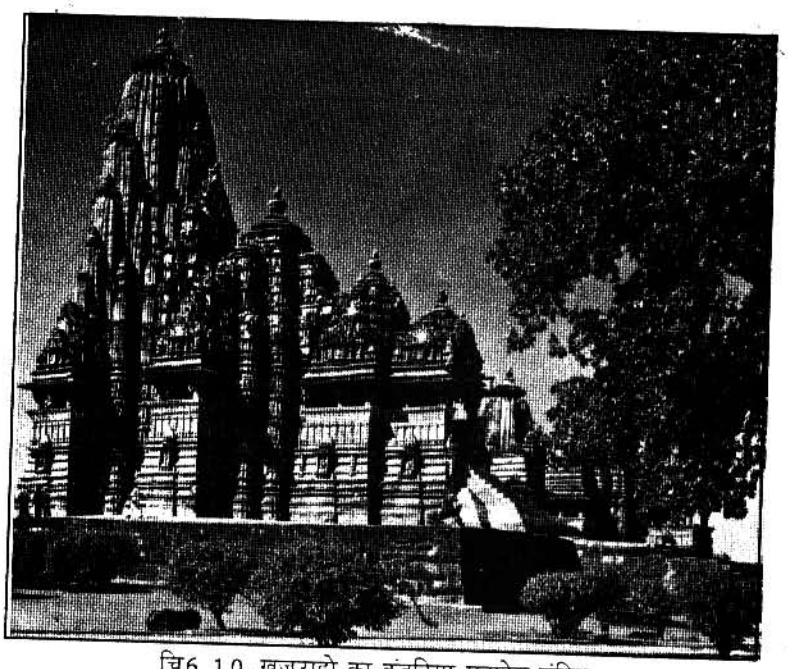

चि6 10. खजुराहो का कंडरिया महादेव मंदिर

शुरू-शुरू के सरल व छोटे मंदिर की तुलना में बाद के इन मंदिरों में अधिक कमरे व बरामदे हैं। शुरू के मंदिर में सिर्फ एक कमरा था जिसमें मूर्ति रखी जाती थी– (इसे गर्भ गृह कहा जाता है) और उसके आगे खम्भों वाला एक खुला बरामदा था। मंदिर की छत सपाट थी। चित्र में इन बातों पर ध्यान दो। इन बाद के मंदिरों में गर्भगृह (मूर्ति कक्ष) के सामने एक और कमरा बनने लगा- यह मण्डप कहलाता था- और उसके आगे फिर खम्भों वाला बरामदा बनता था। यह अर्द्धमण्डप कहलाने लगा। बाद के मंदिरों की छतें भी सपाट नहीं रहीं।

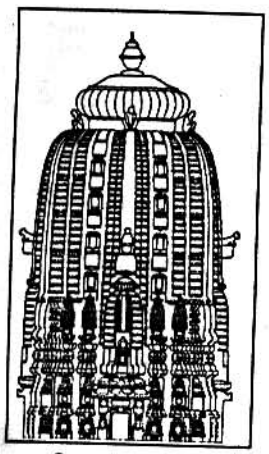

चित्र 11. (क)

कुशल व साहसी कारीगरों ने पत्थर की शिलाओं को इस तरह रखने की तरकीब निकाल ली थी कि छत के ऊपर एक शिखर उठता जाए। बिना चूने की जुड़ाई के इतना ऊंचा शिखर उठाना बहुत जोखिम का काम था। पर उन कारीगरों ने यह जोखिम उठाने का साहस ही नहीं किया, उन्होंने इस शिखर को तराश कर खूबसूरती से सजाया भी।

तुमने तमिलनाडु, उड़ीसा और खजुराहो के मंदिरों के जो चित्र देखे हैं उनमें शिखर की बनावट पर खासतौर से गौर करो। शिखर बनाने की शैली तीनों में अलग है। देखें तुम इन तीन शैलियों को अलग-अलग पहचान सकते हो या नहीं.....

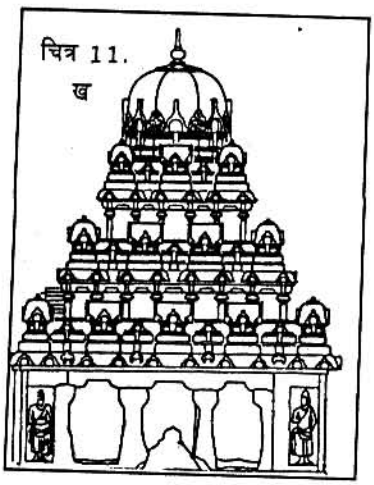

चित्र 11. ख

तुम्हारे आसपास जो पुराने मंदिर हैं उनकी बनावट किस शैली से मिलती जुलती है?

क्या उन मंदिरों में गर्भगृह (—कक्ष) मण्डप व अर्द्धमण्डप, तीनों बने हुए हैं?

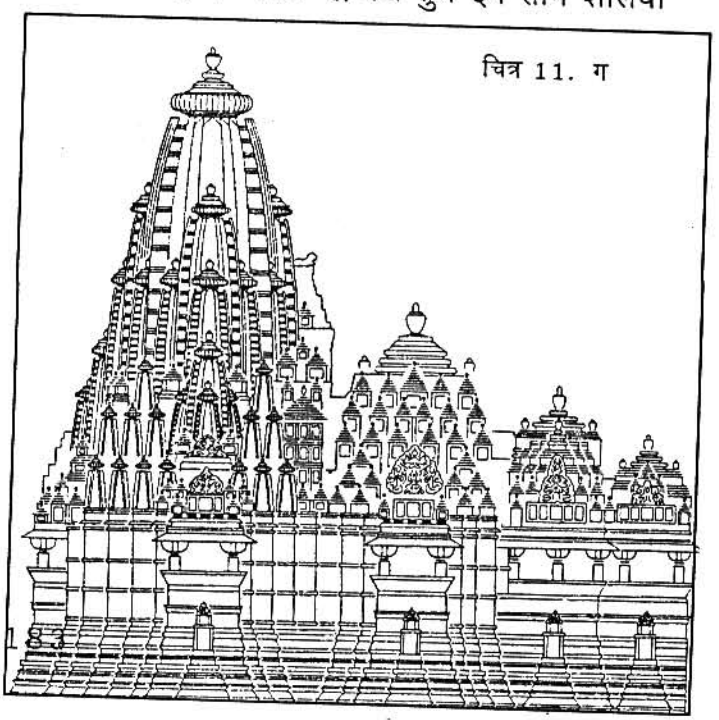

चित्र 11. ग

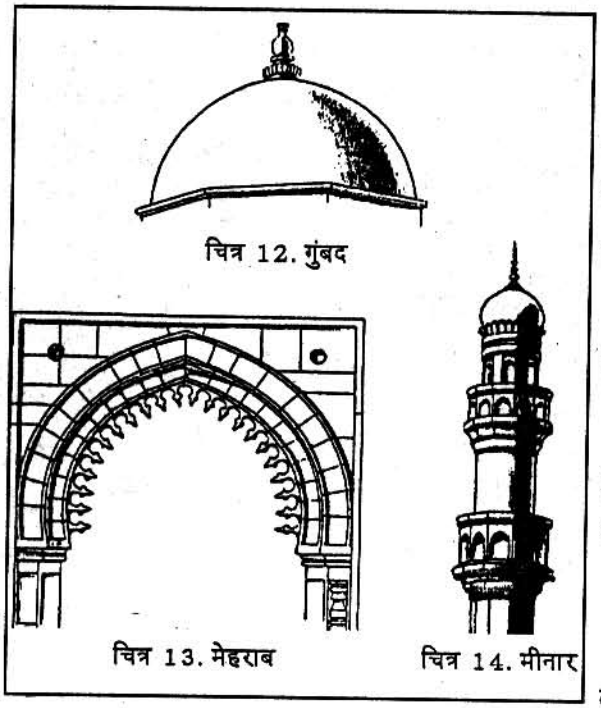

चित्र 12. गुंबद

चित्र 13. मेहराब

चित्र 14. मीनार

इस्लामी इमारतें

ईरानी व ईराकी कारीगर जब भारत आए तो अपने साथ इमारत बनाने की एक नई विधि लेते आए। वे अपनी इमारतें कैसे बनाते थे– उनके चित्र तुम पिछले पाठों में देख चुके हो।

क्या कोई ऐसी बातें नज़र आईं जो स्तूपों, मंदिरों में तुमने देखी ही नहीं थीं?

मुसलमानों की इमारतों की तीन खास बातें थीं। मेहराब, गुम्बद और मीनार। मेहराबें, गुम्बद व मीनारें उनकी सब इमारतों में देखे जा सकते हैं।

मस्जिद में मीनार से क्या किया जाता है, याद आया?

चूने और गारे के घोल से पत्थर या ईंट की मज़बूत जुड़ाई कर के ही मेहराबें व गुम्बद बनाए जा सकते हैं। ये चित्र एक मेहराब के पत्थरों को दिखाता है– देखो कि पत्थर कैसे एक दूसरे से जोड़े गए हैं। चूने की जुड़ाई के बिना क्या ऐसा मेहराब का ऊपरी हिस्सा बनाया जा सकता है?

इसी तरह ये गुम्बद ठोस नहीं है। अन्दर से खोखला है। ठोस गुम्बद तो चट्टान को काटकर बनाया जा सकता है। या पत्थर के टुकड़ों को एक के ऊपर एक रख के भी गोल स्तूप बनाया जा सकता है। पर अन्दर से खोखला गुम्बद बनाने के लिए जुड़ाई के बिना काम नहीं चलेगा। ईरान व ईराक के कारीगर ईंट या पत्थर के टुकड़ों को चूने से जोड़-जोड़ कर ऐसे गोल गुम्बद बनाते थे।

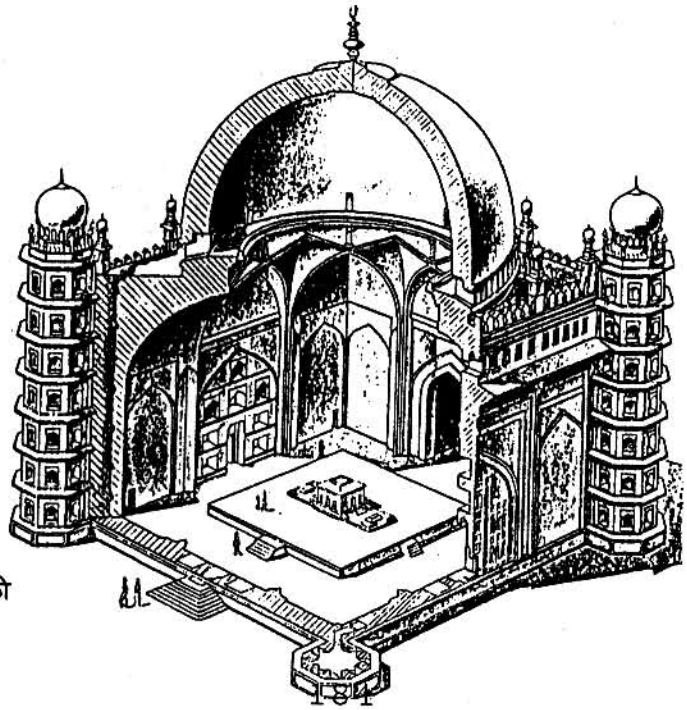

चित्र 15. अंदर से देखो गुंबद को

चित्र 16. सोनगढ़ के मंदिरः इनमें मीनार, गुंबद और मेहराब पहचानो

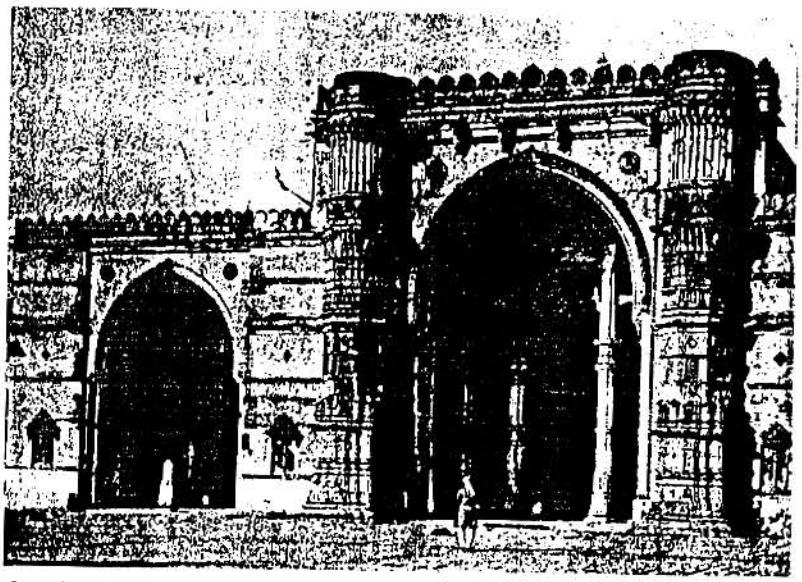

चित्र 17. अहमदाबाद की मस्जिद में खंभे

मिली-जुली शैलियां

ईरानी व ईराकी कारीगरों से ये बातें भारत के कारीगरों ने सीखीं। उन कारीगरों ने भी भारत के कारीगरों के हुनर सीखे। मंदिरों में मेहराबें व गुम्बद बनने लगे। और कई मस्जिदों में पत्थर पर पत्थर रख कर तराशे हुए खम्भे बनने लगे। पिछले पाठों में तुमने तुर्कों के आने के बाद बनी मस्जिद आदि के चित्र देखे थे। उनमें मीनारें, मेहराबें और गुम्बद पहचानो।

तुम्हारे आस-पास जो मंदिर व मस्जिद हों उनमें भी इन चीज़ों को पहचानो।

अभ्यास के प्रश्न

1. सही-सही जोड़ो–

सबसे पहले	-	चूने की जुड़ाई से मेहराबें, गुम्बद, मीनारें,
फिर	-	लकड़ी की इमारतें
उसके बाद	-	गुफा रूपी इमारतें
उसके बाद	-	पत्थर के टुकड़ों से बनीं इमारतें।

2. सामन्तों के समय के कारीगर मंदिरों में मेहराबें और गुम्बद क्यों नहीं बनाते थे?
3. लकड़ी का महल और भाज की गुफा बनाने में कारीगरों ने एक चीज़ बदली–एक चीज़ पहले जैसी रही। जानते हो क्या? सही विकल्प चुनो - इमारत बनाने की विधि/इमारत की बनावट।
4. "एक पुराना शहर" पाठ में जो मंदिर बना है उनमें ये चीज़ें पहचानो- शिखर, गर्भगृह, मण्डप, अर्द्धमण्डप।